अध्याय–2
मुग़ल चित्र शैली

पंद्रहवीं शताब्दी के उतरार्द्ध तक आते–आते भारतीय चित्रकला में महत्वपूर्ण परिवर्तन दिखाई देने लगते हैं। जैन अपभ्रंश शैली में व्यापक परिवर्तन आ गया था। वृहद मालवा में चित्रों के नवीन स्वरूप प्रचलन में आ गए थे, जिनमे प्रयुक्त आकार, विषय व कलागत विशेषताएं नवीन परिवर्तन के स्पष्ट संकेत दे रहे थे। इस समय में चित्रित नियामतनामा, आरण्यकपर्व (आगरा), लौरचन्दा, महापुराण, चौरपंचासिका(पालम) इस परिवर्तन के प्रत्यक्ष उदाहरण हैं । सौलहवीं शताब्दी के प्रारम्भ की कला में जहाँ नवचेतना की पदचाप अनुभव की जा रही थी वहीं रियासतों के आपसी टकराव ने विदेशी आक्रान्ताओं को यहाँ अपने पैर पसारनें के लिए अनुकूल परिस्थितियां उत्पन्न की। भारत में मुग़लों का प्रवेश 1526 ई. में हुआ जब बाबर पानीपत युद्ध में विजय प्राप्त कर दिल्ली का शासक बना। बाबर तैमूर (पितृपक्ष) की पांचवी पीढ़ी में तथा मंगोल यौद्धा चंगेज खां (मातृ पक्ष) की चौदहवीं पीढी में जन्मा। इसलिए इन्हें मुग़ल कहा गया। मुग़ल शहंशाह प्रारम्भ से ही कलाप्रेमी रहे हैं। बाबर, हुमायूँ अकबर, जहाँगीर और शाहजहाँ तक इस शैली में निरन्तरता एवं क्रमिक विकास दिखाई देता है। मुग़ल शैली प्रारम्भ में पूर्णतः ईरानी कला थी जिसे भारतीय सन्दर्भों में प्रस्तुत किया जा रहा था। अकबर के समय यह शैली राजस्थानी, अपभ्रंश व दक्षिणी शैलियों के समन्वय से नवीनता प्राप्त कर मौलिकता प्राप्त करने लगी। कहा जा सकता है कि ईरानी व राजस्थानी शैली मुग़ल शैली की जन्मदाता हैं। जहाँगीर के समय यह पूर्णतया भारतीय हो गई परन्तु शाहजहाँ के समय इस पर यूरोपीय प्रभाव अधिक हो गया था। रायकृष्ण दास के मतानुसार भारत में मुग़ल शैली का जन्म बाबर के आगमन से हुआ है और बाद में शाहजहाँ तक के मुग़ल शासकों के काल में उसका निरन्तर विकास होता रहा, जिसका चरमोत्कर्ष जहाँगीर का शासन काल था। शाहजहाँ के पश्चात औरंगजेब सत्तारूढ हुआ। वह कट्टर शासक था। उसने कलाकारों को चित्रांकन छोड़ने पर बाध्य कर दिया। जान बचाने कलाकार दूसरी रियासतों में शरण लेने लगे या अन्य कार्य कर जीविकोपार्जन करने लगे। यहीं से मुग़ल कला का पतन प्रारम्भ हुआ। दरबारी कला होने के कारण मुग़ल शैली प्रत्येक बादशाह के साथ उसकी रूचि के अनुसार परिवर्तित होती रही इसलिए मुग़ल कला को प्रत्येक मुग़ल बादशाह के काल क्रमानुसार समझना औचित्यपूर्ण रहेगा।

बाबर

बाबर को भारत में मुग़ल– साम्राज्य की स्थापना (1526 ई) का श्रेय है । लेकिन वह बहुत कम समय के लिए ही शासन कर सका। 1530 ई में उसकी मृत्यु हो गई । इस काल के चित्र उपलब्ध नहीं हैं लेकिन बाबर की चित्रकला में बड़ी रूचि थी क्योंकि उसने ''पूर्व का राफेल'' कहलाने वाले प्रसिद्ध ईरानी चित्रकार बिहजाद तथा शाह मुजफ्फर की चित्रकृतियाँ देखी व उनकी समीक्षा भी की थी। बाबर ने अपनी आत्मकथा 'तुजुक ए बाबरी' (बाबरनामा) में इन कलाकारों का उल्लेख प्रशंसा के साथ किया है।

हुमायूँ

बाबर के पश्चात उसके ज्येष्ठ पुत्र हुमायूं (1530–1556 ई.) ने राज्य संभाला। हुमायूं का पूरा जीवन संघर्षो में बीता। लेकिन वह कला प्रेमी था। अपने लश्कर में वह चित्रकार भी रखता था। जब वह ईरान के शाह की मदद

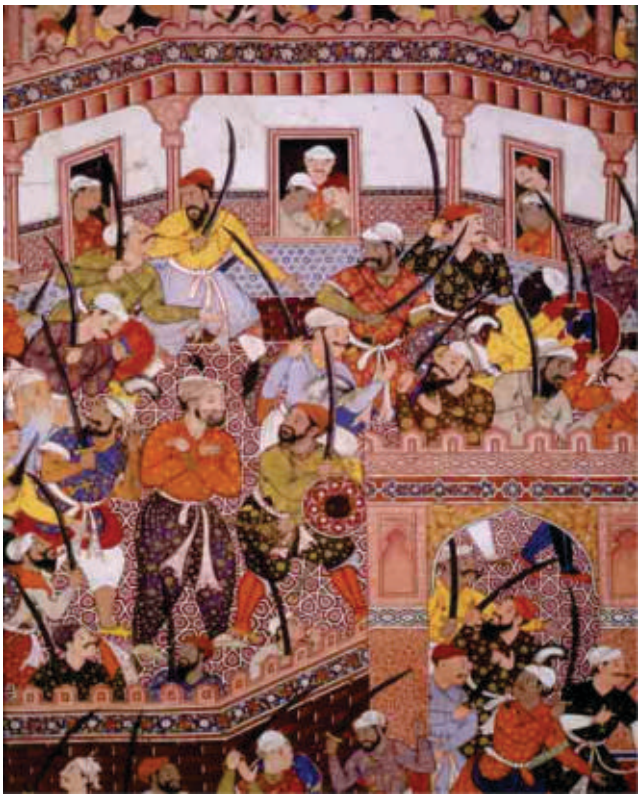

चित्र संख्या–1 हम्जा नामा

चित्र संख्या–2 अनवार ए सुहैली

लेकर पुनः भारत आया तो अपने कला प्रेम के कारण ईरानी चित्रकार मीर सैय्यद अली 'जुदाई' और ख्वाजा अब्दुसमद शीराजी को भी भारत लेकर आया। ये दोनो ईरानी शैली के सिद्धहस्त कलाकार थे। बालक अकबर ने उनसे चित्रकला सीखी। इस समय जो चित्र तैयार किये गये थे, वे पूर्णतया फारसी या ईरानी शैली में तैयार किये गये थे। हुमायूं के समय में 'दास्तान–ए–अमीर हम्जा' (हम्जानामा)(चित्र संख्या 1) का चित्रण प्रारम्भ हुआ परन्तु यह अकबर के समय में पूरा हुआ।

अकबर

पोथीखाना (पुस्तकालय) की सीढ़ीयों से पैर फिसलकर गिरने से हुमायूं की मृत्यु हुई जिस कारण मात्र तेरह वर्ष की आयु में अकबर को राज्य की बागडोर सम्भालनी पड़ी। बाबर व हुमायूँ कला की दृष्टि से जीवन का आनन्द राजनीतिक परिस्थितियों की अस्थिरता के कारण न ले सके परन्तु अकबर ने अपनी कुशलता से न केवल राज्य का विस्तार किया बल्कि एक मजबूत व समन्वयवादी शासक की भी छवि प्राप्त की। अकबर के शासनकाल में ईरानी चित्रकार जो पहले ही भारत में आ गये थे, उनमें मीर सैयद अली व ख्वाजा अब्दुसमद शिराजी प्रमुख थे। इन दोनों कलाकारों ने अकबर की रूचि व नीति के अनुरूप कला क्षेत्र में भी समन्वय की भावना भर दी।

इन्होंने ईरानी रूपाकारों को भारतीय रंगों में संजोकर अकबर के विचारों को साकार कर दिया तथा दसवन्त और बसावन जैसे प्रतिभा सम्पन्न भारतीय चित्रकारों ने मिलकर मुग़ल शैली को प्राणवान बनाया, जिससे मुग़ल शैली में ईरानी कठोरता के स्थान पर भारतीय कोमलता का सुखद समावेश हुआ। अकबर विद्वान व नीतिज्ञ होने के साथ ही कला पारखी भी था। अतः उसने सैंकड़ों चित्रकारों को संरक्षण, सम्मान और प्रेरणा प्रदान की। मुग़ल इतिहासकार अबुल फजल ने अपनी पुस्तक ''आइन–ए–अकबरी'' में लिखा है कि अकबर का बाल्यकाल से ही चित्रकला के प्रति स्वाभाविक झुकाव था। उसने बड़े–बड़े कलाकारों को अपने दरबार में आश्रय दिया। इन चित्रकारों की ख्याति ईरान व यूरोप तक फैल चुकी थी। भारतीय चित्रकला को व्यापक रूप से देखकर भारतीय संस्कृति व सभ्यता के अनुरूप ईरानी शैली में उसने ऐसे चित्रों का निर्माण करवाया जो समन्वयपूर्ण थे। अकबर ने भारतीय कला, धर्म व संस्कृति

को नज़दीक से देखकर मुग़ल चित्रकारों को इन्हें चित्रित करने के लिए प्रेरित किया। दास्तान–ए–अमीरहम्जा, शाहनामा, तारीख–ए–खानदान–ए–तैमूरिया, रज्मनामा, वाकयात बाबरी, अकबरनामा, अनवार–ए–सुहैली, दराहनामा जैसी सचित्र पुस्तकों के साथ ही रामायण, महाभारत, योगवशिष्ठ, नल–दमयन्ती, शकुन्तला, कथा–सरित–सागर, कृष्ण चरित आदि पुस्तकों का बड़ी कुशलता से चित्रण व परस्पर अनुवाद करवाया।(चित्र संख्या 2)

अकबर का कला प्रेम – अकबर स्वयं एक सिद्धहस्त कलाकार था क्योंकि उसके पिता हुमायूँ ने उसके चरित्र निर्माण के लिए ईरान के प्रसिद्ध चित्रकारों से उसे चित्रकला का अभ्यास करवाया था। अकबर के समय राजनीतिक परिस्थितियों में थोड़ी स्थिरता व शांति आ गई थी अतः शाही क्रिया–कलापों के पश्चात् जो समय बचता था, उसे अकबर चित्रशालाओं में जाकर व्यतीत करता था। उसके दरबार में मुस्लिम व हिन्दू दोनों धर्मों के चित्रकार–ख्वाज़ा अब्दुसम्मद शीराजी, मीर सैयद अली, सुखलाल, दसवन्त, मुकुन्द, जगन्नाथ माधव, महेश, ताराचंद, सांवल, खेमकरण, हरवंश, राम तथा बसावन आदि थे। अबुल फजल ने लिखा है कि ईरानी चित्रकारों की अपेक्षा भारतीय चित्रकार अधिक निपुण सूक्ष्मदर्शी व भावनाप्रवण थे। उनकी कला के सामने विश्व के कुछ ही कलाकार ठहर सकते थे। उनकी कला में जैसे जीवन बोल उठता था। तानसेन जैसा महान संगीतकार भी उसके दरबार में था। अकबर चित्रकला के साथ शेष अन्य कलाओं पर भी ध्यान देता था। चित्रकारों को उनके हुनर पर अकबर विभिन्न उपाधियों से सम्मानित करता था, जैसे– नादिर उल मुल्क, हुमायूँ नसारी आदि। सभी ललित कलाओं की समान रूप से प्रगति करने वाले उसके दरबार के योग्य नवरत्न अपने कार्य में पूर्ण दक्ष थे। अकबर कालीन चित्रों को रायकृष्ण दास ने निम्नानुसार विभाजित किया है –

1. अभारतीय कथाओं के चित्र – हम्जानामा, खमसा निजामी आदि।

2 भारतीय कथाओं के चित्र – रामायण, रज्मनामा (महाभारत), नलदमन (नल दमयंती) अनवार ए सुहेली (पंचतंत्र) आदि।

3. ऐतिहासिक ग्रंथ – शाहनामा (ईरान के शासकों का इतिहास), तैमूरनामा (तैमूर का इतिहास), बाबर नामा, अकबर नामा आदि।

4.व्यक्ति चित्र (शबीह) तथा सामाजिक चित्र

रायकृष्णदास के अनुसार अकबर काल में लगभग बीस हजार चित्र बनाये गये थे जो आज भी विश्व के विभिन्न संग्रहालयों में संरक्षित हैं।

अकबरकालीन चित्र शैली की विशेषताएँ – अकबर ने भारतीय जीवन को निकट से समझा था यही कारण था कि बादशाह की रूचि को महत्व मिलने से तत्कालीन चित्रकला पर प्रचलित भारतीय कलाओं का विशेष प्रभाव पड़ा। राजपूत, ईरानी व यूरोपीय तत्वों के मिश्रण से यह विशिष्ट शैली नई पहचान बना सकी। अकबर ने हिन्दू–मुसलमानों के सौहार्द को बढ़ावा देने के लिए चित्र–शैली में एक समन्वित विचार दिया। इस काल में दरबारी शान–शौकत, सुकुमारता, मुग़ल बादशाहों की वीरता तथा शिकार के दृश्यों की अधिकता है। ईरानी प्रभाव के चलते मुग़ल चित्रकारों ने रंगों का चमकदार ढंग से प्रयोग किया। उन्होंने केसरिया, पीला, नीला, लाल, गुलाबी, हरे रंग का अधिक प्रयोग किया। अकबरकालीन चित्रों में रेखा को महत्व मिला। अकबरकालीन चित्रों में एक चश्म चेहरा बनाने की सामान्य परम्परा थी अर्थात् एक तरफ की मुखाकृति का ही अंकन किया जाता था। चित्रों में यथा स्थान मुगलिया वस्त्रों व आभूषणों, पशु–पक्षियों तथा वृक्षों को अंकित किया गया। अकबरकालीन चित्रकार 'शबीह' अर्थात् 'व्यक्ति चित्र' बनाने में पूर्ण दक्ष थे। राजा पृथु का चित्र इनमें महत्वपूर्ण है जो बनारस के भारत कला भवन में सुरक्षित है। अधिकांश चित्रकारों ने इन व्यक्ति चित्रों में नियमों का पूर्ण पालन किया है। वस्त्रों मे होने वाली सलवटों को स्वाभाविक रूप में चित्रित किया गया है। एक ही चित्र को कई चित्रकार मिलकर बनाते थे। महत्त्वपूर्ण व्यक्तियों के चित्र बनवाकर उन्हें प्रदर्शित भी करवाया जाता था। संयोजन की दृष्टि से चित्रों में भीड़–भाड़ दिखाई जाती थी तथा प्रधान विषय को बड़ी शान–शौकत से दर्शाया जाता था। 'आईन–ए–अकबरी' में अकबरकालीन चित्रकला का समुचित उल्लेख प्राप्त होता है। चित्रकार की तूलिका को 'कलम' कहा जाता था और चित्रकार को 'कलम–करतार'। तूलिकाएँ पशुओं के बालों से बनाई जाती थी। 'आईने अकबरी' में उस समय चित्र बनाने के लिए प्रचलित अनेक प्रकार के कागज़ों का उल्लेख हुआ है। सियालकोट (पंजाब) में कागज़ का एक मुग़ल

कारखाना स्थापित किया गया और इसमें बने कागज़ को 'सियाल कोटी' कागज़ या 'मुगलिया कागज़' कहा जाता था।

अकबरकालीन प्रमुख चित्रकार

अकबर के समय कलाकारों की बहुत बड़ी संख्या चित्रांकन कर रही थी। इनमें हिन्दू मुसलमान दोनों धर्मों के चित्रकार थे।

(1) मीर सैयद अली :– यह ईरानी चित्रकार हुमायूँ के साथ भारत आया था। यह ईरान की सफवी शैली का चित्रकार था। इसके पिता का नाम मंसूर था, जो स्वयं चित्रकार था। मीर सैयद अली अपना उपनाम ''जुदाई'' लिखता था। इसके चित्रों में सुन्दर और मोहक वातावरण मिलता है। हम्जानामा के चित्र इसके निर्देशन में बने। इसे लौकिक और दैनिक जीवन से संबंधित विषयों का चित्रण अधिक प्रिय था। इसके बनाए चित्रों में लैला–मजनू का चित्र, मजनू का जन्म तथा पिता का व्यक्ति चित्र प्रमुख है।

(2) ख्वाजा अब्दुसमद शिराजी : – यह हुमायूँ के साथ भारत आया था। यह ईरानी कला केन्द्र शिराज का रहने वाला था। श्रेष्ठ चित्रकारी के कारण इसे 'शीरी कलम' की उपाधि दी गई। इसने हुमायूँ और अकबर को कला शिक्षा दी। यह अकबर की चित्रशाला का प्रमुख था। इसके शिष्य भी श्रेष्ठ कलाकार हुए। यह अकबर का प्रिय कलाकार था।

(3) दसवन्त : – दसवन्त अकबर की चित्रशाला में श्रेष्ठ हिन्दू चित्रकार था। प्रारम्भ में यह चित्रशाला में सेवक था। इसने अब्दुसमद से चित्रकारी सीखी। रज्मनामा में इसने सुन्दर चित्र बनाए। इसने विचित्र अकृतियों को भी अंकित किया। उसने दैनिक जीवन पर आधारित पौराणिक दृश्यों को भी अंकित किया। मुग़ल कला में भारतीयता का भाव इसी कलाकार की देन है।

(4) बसावन : – यह भी अकबर दरबार का महत्वपूर्ण हिन्दू चित्रकार था। इसने सौ के आसपास चित्र बनाए। अबुल फजल ने इसकी बहुत प्रशंसा की है। बसावन के चित्र यथार्थ के अधिक नज़दीक है। यह कलाकार पृष्ठभूमि बनाने, मुखकृति की विशेषताओं का अंकन करने, रंगों के मिश्रण तैयार करने आदि में श्रेष्ठ था। दरबारनामा, अकबरनामा आदि ग्रंथों में इस कलाकार ने चित्रण कार्य किया।

चित्र संख्या 3 विविध पक्षी व टर्की बाज

जहाँगीर कालीन मुग़ल कला : –

1605 ई. में जहाँगीर ने मुग़ल साम्राज्य की बागडोर संभाली। जहाँगीर एक विद्वान, सहृदय, प्रति प्रेमी व कला उपासक प्रशासक था। जहाँगीर के काल में कुछ वर्षों तक अकबर शैली का ही अनुसरण होता रहा लेकिन बाद में यह शैली छाया प्रकाश की अधिकता के साथ नये तत्वों को लेकर परिवर्तित हुई। अकारीजा नामक ईरानी चित्रकार जहाँगीर की चित्रशाला का प्रमुख था। अकारीजा की शैली भारतीयता से परिपूर्ण थी। अकारीजा का पुत्र अबुल हसन जहाँगीर का प्रिय कलाकार था। उस्ताद मसूंर के बनाए पशु–पक्षियों के चित्र आकर्षक हैं, जिनमें टर्की कोक व बाज के चित्र विश्व प्रसिद्ध हैं। (चित्र संख्या 3)

जहाँगीर के समय विभिन्न मनोभावों का चित्रण किया गया है। प्रायः जहाँगीर के चेहरे के पीछे प्रभामण्डल अंकित किया गया है । जहाँगीर चित्रकारों को अध्ययन के लिए बाहर भी भेजता था। बिशनदास ने ईरान में प्रशिक्षण लिया था। उसने ईरान के शाह के लिए भी कई वर्षों तक चित्रण किया जहाँ उसका बनाया हुआ "शेख फूल सूफी संत" का चित्र विश्व प्रसिद्ध है। नूरजहाँ के विवाह के बाद चित्रकला के प्रति जहाँगीर की रूचि बढ़ गई थी। मनोहर, उस्ताद मंसूर, अकारीजा, हसन, बिसनदास, गोवर्धन आदि इस समय के चित्रकार थे। प्रकृति प्रेम के कारण ही जहाँगीर ने अपना मकबरा खुला बनाने के आदेश दिये। इस काल को मुग़ल कला का सर्वश्रेष्ठ समय माना जाता है।

जहाँगीर कालीन चित्रों के विषय–

जहाँगीर कालीन कला में प्रकृति व मानवीय भावों का समावेश हुआ। वहीं ऐतिहासिक ग्रंथ चित्रों का महत्व कम हो गया था।

इस काल में सामाजिक, धार्मिक और राजनीतिक विषयों से संबधित चित्रों को बहुत ही कुशलता से चित्रित किया गया है। दरबारी विषयों का चित्रण शालीनता से हुआ है। आमोद–प्रमोद, आखेट, रथ यात्रा, रनिवास, उत्सव आदि विषयों के चित्र भी यथार्थता से चित्रित हुए। चित्रों में मौलिकता है। चित्रों के संयोजन में पूर्णता लाने के लिए सौन्दर्य के सभी आवश्यक तत्वों का समावेश किया गया। जहाँगीर के समय यूरोपियन चित्रों की अनुकृतियों की ओर चित्रकारों का ध्यान गया। सभी चित्रों का आकर्षक व सुकोमल अंकन हुआ। चित्रों में राजसी जीवन के साथ–साथ ऐतिहासिक घटनाओं, इसाई, यूरोपियन तथा अन्य विषयों का भी सुन्दर चित्रण हुआ।

जहाँगीर कालीन कला की विशेषताएँ : –

जहाँगीरकालीन चित्रकला में प्राकृतिक दृश्यांकन पूर्णतया भारतीय तत्वों से परिपूर्ण है। चित्रों में यथार्थवादी प्रभाव है। अत्यन्त बारीक रेखांकन व वस्त्रों में सलवटें और फहरान की बनावट दर्शनीय है। चेहरे में उभार के लिए महीन रेखाओं के पुनरावृत प्रयोग से छाया या परदाज दर्शाया गया है जिसे 'ख़तपरदाज़' कहा जाता था। छोटे–छोटे बिन्दु लगाकर छाया दर्शाने को दाना–परदाज़ कहते थे। छायाप्रकाश के कारण जहाँगीरकालीन चित्रों में त्रि–आयामी प्रभाव आ गया है। प्रकृति व प्राणियों के अंकन में अत्यधिक स्वाभाविकता आई। हाथियों के चित्रण में अजन्ता का प्रभाव स्पष्ट दिखता है। रेखाएं लयात्मक व प्रभावी हैं। चित्रों में सूफियाना रंग–योजना सौम्य व हल्की है और रंग आँखों को प्रिय लगते हैं। हल्के गुलाबी, सफेद, सोने व चाँदी के रंगों का श्रेष्ठ प्रयोग किया गया है। चेहरे एक चश्म हैं लेकिन भावपूर्ण हैं। नारी चित्र भी इस काल में दिखाई देते हैं। जहाँगीर कालीन कला बादशाह की रूचि व स्वभाव के अनुसार पल्लवित हुई, जिसमें प्रकृति व मानवीय भावनाओं को महत्व मिला। पुरूष वेशभूषा में लम्बा जामा, पटका, खिड़कीदार पगडी का बाहुल्य है और स्त्री वेश–भूषा में ओढ़नी को बढ़ावा मिला है। इस प्रकार की अनेक विशेषताओं से जहाँगीरकालीन चित्र ईरानी प्रभाव से मुक्त हुए हैं और उनमें भारतीयता का समावेश हुआ। स्वाभाविकता व यथार्थता उनका विशिष्ट गुण रहा है।

शाहजहाँ कालीन मुग़ल चित्रकला –

जहाँगीर के पश्चात् मुग़ल शासन शाहजहाँ ने संभाला। शाहजहाँ अपने पूर्वजों की अपेक्षा कट्टर था। वह चित्रकला और चित्रकारों का सम्मान करता था, परन्तु वास्तव में वह स्थापत्य कला को अधिक महत्त्व देता था, ताजमहल इसका उत्कृष्ट उदाहरण है। मुमताज से विवाहोपरान्त यह रूचि और बढ़ गई थी। इस समय की कला बिल्कुल नये अवतार में दिखती है। शाहजहाँ के समय की चित्रकला दरबारी व्यवस्था में बंधी हुई है, परन्तु तकनीक उच्च स्तरीय थी। भावों के स्थान पर प्रबन्धन को महत्त्व मिला। इस समय यूरोपीय प्रभाव बढ़ रहा था। छाया–प्रकाश का अत्यधिक प्रयोग हुआ व तीसरे आयाम के प्रति कलाकारों का मोह बढ़ गया शाहजहाँ कालीन ''शाहनामा'' सर्वश्रेष्ठ ग्रन्थ है। इस समय के चित्रों में मुगलिया दरबार का वैभव तथा विलासिता के दृश्यों को महत्त्व के साथ अंकित किया गया। रेखाएँ दमहीन हो गई थी। वस्तुओं में बहुत बारीक काम किया गया। तकनीक भी उन्नत थी। परिप्रेक्ष्य का प्रयोग हुआ। भाव एवं भंगिमाओं के अंकन में सफाई व स्वाभाविकता है। नारी चित्र भी बने हैं। हिन्दू विषयों के चित्रण में कमी आई। सन्तों से मुलाकात या दरबारी दृश्यों का अंकन हुआ। ईसाई धर्म के चित्र भी बने। शाहजहाँ के समय 'स्याह कलम' के चित्र भी प्रचलन में थे। स्याह कलम में कागज़ पर सरेस या अण्डे व फिटकरी का अस्तर लगाया जाता था। केवल काले रंग से चित्रांकन किया जाता था। होठों आदि पर हल्का रंग लगाते थे लेकिन रेखांकन अत्यधिक बारीक होता था। विचित्तर, चितरमन, होनहार, लालचन्द आदि इस समय दरबारी चित्रकार थे।

शाहजहाँ कालीन चित्रकला के विषय व विशेषताएँ–

शाहजहाँ कालीन चित्रकला में अत्यन्त बारीक रेखांकन, मीनाकारी व सफाई है। शाहजहाँ को यूरोपीय तैल चित्र बहुत पसंद थे इसलिए इस काल में छाया–प्रकाश के साथ यथार्थता को महत्व मिला। ईसाई विषयों पर चित्र बनाने की प्रथा प्रचलित हो गई। शाहजहाँ कालीन चित्र शैली दरबार तक ही सिमट कर रह गई। पुरूषों के वेशभूषा में लम्बा पायजामा, लम्बे बेल–बूंटेदार दुपट्टे बनवाये गये और स्त्री वेशभूषा में पारदर्शी वस्त्र तथा सिकुड़ा पायजामा आदि पहनाए गये। विभिन्न प्रकार के बेल–बूंटेदार आलेखनो से चित्रकला को नवीनता मिली। हिन्दू संस्कृति का पुट समाप्त हो गया। चित्रों में हाथियों के आकारों में बदलाव आया और हाथी चौड़े

आकार में बनवाये जाने लगे। दरबारी सभ्यता, वैभव, अदब–कायदे, राजदूतों, पूर्वजों सम्मानित व्यक्तियों, गोष्ठियों के चित्र अधिक बने। लोक गायकों आदि के चित्र भी बनाए गए हैं। स्वर्णलेप का प्रयोग हुआ है। इस प्रकार के व्यक्ति चित्र विशेष प्रसिद्ध है। हाशिए चौड़े बनाये जाते। सज्जा पर विशेष ध्यान दिया जाता था। पुस्तकों के आवरण जिन्हें 'बयाज़' कहा जाता था, आकर्षक बनाये जाते थे।

मुग़लकला का पतन : –

शाहजहाँ के पश्चात् औरंगजैब ने जब शासन सम्भाला तो कला पर कुठाराघात हुआ। वह कट्टर शासक था। उसने अपने भाईयों की हत्या कर दिल्ली की सत्ता हासिल की थी। उसने अपने पिता शाहजहाँ को भी कैदखाने में डाल दिया। वह कला से घृणा करता था। वह इसे धर्मविरूद्ध मानता था। उसने अपने ही पुरखों के बनवाये भित्ति चित्रों पर सफेदी पुतवा दी थी। उसने कलाकारों को चित्रांकन छोड़ने पर बाध्य कर दिया। फलस्वरूप कलाकार इधर–उधर की रियासतों में शरण लेने चले गए या फिर अन्य कार्य करने लगे। चित्रांकन पूर्णतया बंद हो गया। औरंगजेब के समय मुग़ल कला का सूरज ऐसा अस्त हुआ कि फिर कभी उदय ही नहीं हुआ। औरंगजेब के पश्चात के शासक विलासिता में डूबे रहे। जब उन्हें अपनी ही सुध नहीं थी तो वो कला की क्या सुध लेते? परिणामतः कला अपने अतीत को भुलाकर नष्ट प्रायः हो गई।

महत्वपूर्ण चित्र :–

मुगल काल में बडी संख्या में चित्रों का निमार्ण हुआ उनमें कुछ चित्र विशेष प्रसिद्ध हैं –

सलीम का जन्म :– अकबर कालीन चित्रों में 'सलीम का जन्म' चित्र बहुत महत्वपूर्ण है। यह चित्र अपने तल विभाजन तथा विहंगम दृश्यमानता के लिए जाना जाता है। इस चित्र में सम्पूर्ण कथानक को विभिन्न खण्डों में बांटकर अंकित किया गया है। महल के बाहर खैरात बांटने का दृश्य, महल के भीतर नृत्यरत स्त्रियां अंकित हैं। एक खण्ड में सलीम को स्नान कराने का दृश्य है वहीं अगले खण्ड में प्रसूति गृह दिखाया गया है। ऊपरी भाग में छत पर मोर को अंकित किया गया है। ऊंचे क्षितिज व पार्श्व में प्रकृति का मनोरम अंकन हुआ है। सम्पूर्ण चित्र में आकर्षक रंग संगति है। यह चित्र चित्रकार केशु द्वारा बनाया गया है ।(चित्र संख्या 4)

कबीर और रैदास :– शाहजहाँ कालीन चित्रों की सम्पूर्ण विशेषताओं को दर्शाता यह चित्र उस्ताद फकीरउल्लाह द्वारा 1640 ई. में अंकित किया गया है। धूसर रंग संगति वाले इस चित्र में ग्रामीण परिवेश दर्शनीय है। झोंपडी के बाहर कबीर

चित्र संख्या 4 सलीम का जन्म

चित्र संख्या 5 कबीर और रैदास

चित्र संख्या 6 दारा शिकोह की बारात

चित्र संख्या 7 जहांगीर का सपना

कपडा बुन रहे हैं वहीं उनके पास रैदास एक चटाई पर बैठै हैं। दोनो ही दीन–दुनिया को भूल ईश्वर के ध्यान में मस्त हैं। दोनों भक्तों को कृषकाय बनाया गया है। मटमैले भूरे रंग की प्रधानता से विषयगत प्रासंगिकता को बल मिला है। बॉर्डर नीले रंग में दर्शाया गया है। शाहजहाँ कालीन चित्रों का यह श्रेष्ठ उदाहरण है ।(चित्र संख्या 5)

दारा शिकोह की बारात :– यह चित्र मुगल कालीन चित्रों में अपने संयोजन के लिए जाना जाता है। इस चित्र में वस्त्राभूषण, घोडों, व शाही लवाजमें का चित्ताकर्षक अंकन है। दूल्हे के परिधान में घोडी पर सवार दारा, पीछे घोड़े पर शाहजहाँ, हाथियों पर राज परिवार की स्त्रियाँ व वादक दल को बहुत ही आकर्षक ढंग से संयोजित किया गया है। बारात के स्वागत के लिए हाथ जोडे खडे स्त्री– पुरूषों का अंकन इस चित्र के कथानक को अधिक स्पष्ट करता है। पार्श्व में आतिशबाजी व सजावट चित्रकार की सुन्दर कल्पना शक्ति का परिचय देती है। मावकृतियां एक चश्म बनाई गई हैं । यह चित्र हाजी मदानी द्वारा बनाया गया।(चित्र संख्या 6)

जहाँगीर का सपना :– यह चित्र जहाँगीर के प्रिय चित्रकार अबु हसन द्वारा चित्रित किया गया है। इस चित्र में जहाँगीर को ईरानी शाह अब्बास से गले मिलते दर्शाया गया है। वास्तव में दोनो शासक कभी मिले ही नहीं थे। यह चित्र उस दौर का है जब जहाँगीर के ईरानी सफवी सुल्तान के साथ रिश्ते मधुर नहीं थे। चित्रकार अबु हसन ने चतुराई से चित्र में जहाँगीर को श्रेष्ठ व विश्व विजेता के भाव से अंकित किया है। चित्र में ग्लोब पर जहाँगीर को शेर व शाह अब्बास को भेड पर खडे बनाया है। वस्त्राभूषणों व प्रभामण्डल से भी जहाँगीर को श्रेष्ठ दिखाने का प्रयास किया गया है । ग्लोब पर अंकित विश्व मानचित्र तत्कालीन संदर्भ में सबसे सटीक माना जाता है। चित्र में स्वर्ण प्रभामण्डल अंकित कर जहाँगीर की उपाधि 'नूर– अल– दीन' (आस्था की रोशनी) को प्रतिबिम्बित किया है । चित्र टेम्परा रंगों से बना है जिनमें स्वर्ण, रजत रंग की अधिकता है। चित्रकार अबु हसन को जहाँगीर ने नादिर–अल–जमा (युग शिरोमणी) की उपाधि से विभूषित किया था ।(चित्र संख्या 7)

मुग़ल शैली की सामान्य विशेषताएँ :–

मुग़ल शैली की अनेक विशेषताएँ हैं। मुग़ल शैली के चित्रों में विविधता तो है परन्तु अजन्ता के चित्रों के समान सजीवता नहीं

है। मुग़ल शैली की चित्रकारी में सुरूचि और सफाई का पूरा ध्यान रखा गया। घरेलू चित्रण मुग़ल शैली मे नहीं हो सका। सामाजिक जीवन के विषयों का अंकन हुआ। दरबारी अनुशासन के कारण मानवी चित्रों की कतार–सी दिखाई देती है। आखेट के चित्र, ऐतिहासिक घटनाओं के चित्र, प्राकृतिक चित्रण, पशु–पक्षी चित्रण, धार्मिक चित्र, पौराणिक चित्र तथा दरबारी चित्रों का प्रभावी चित्रण हुआ है। वास्तविकता का चित्रण हुआ तथा प्रकृति के सुन्दर दृश्यों की झांकियां बनाई जाती थीं। कई प्रकार के भारतीय पशु–पक्षियों का भी सुन्दर चित्रण हुआ। दरबारी शान–शौकत, शिकार एवं युद्ध सम्बन्धी चित्र इस शैली में विशिष्टता लिए हुए हैं। हाथी, बैल, मुर्गे, बटेर व तीतरों की लड़ाइयों के चित्र भी बड़े सुन्दर हैं। अमीर हम्जा, शाहनामा जैसी ईरानी कथाओ, लैला–मजनूं, शीरी–फरहाद की प्रेम कथाओं के चित्र बनवाये गये। हिन्दू धार्मिक कथाओं जैसे रामायण, महाभारत, योगवशिष्ठ के चित्र बने। ऐतिहासिक चित्रों में स्वयं मुग़ल शासकों के जीवन की बीती हुई घटनाओं का बखूबी चित्रांकन करवाया गया।

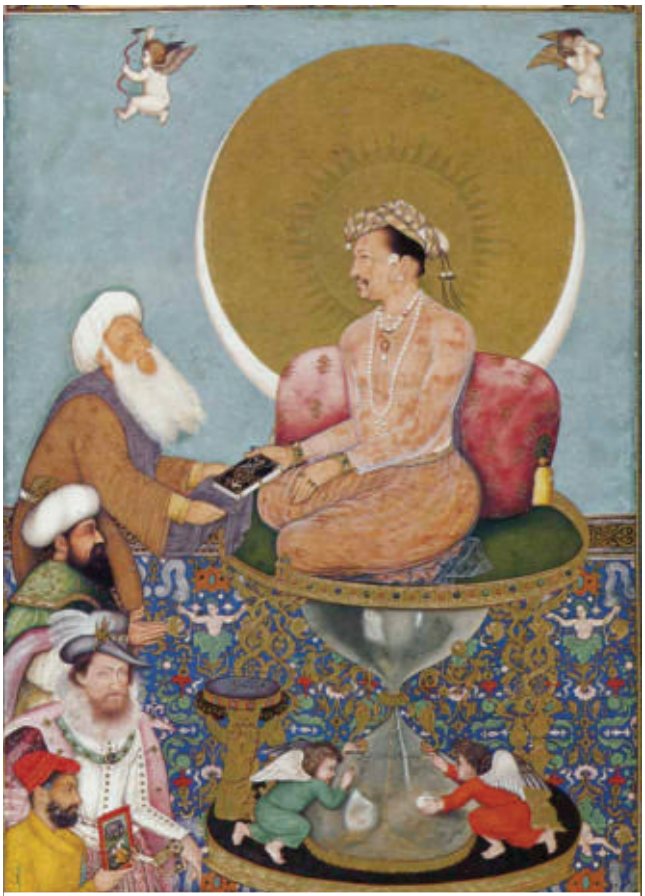

चित्र संख्या 8 जहांगीर की फकीर से मुलाकात

तारीख–ए–खानदान–ए–तैमूरिया आदि पर आधारित चित्रण करवाया गया। सम्राटों, राजकुमारों, अमीरों, सन्तों एवं फकीरों तथा इतिहास प्रसिद्ध व्यक्तियों के व्यक्ति चित्रों अर्थात् शबीहों का बड़ी चतुराई व कलात्मक ढंग से चित्रण किया गया। संतो–फकीरों से मुलाकात के चित्र भी बने है। (चित्र संख्या 8)

भारतीय तथा विदेशी चित्रकारों की फारसी–ईरानी मिश्रित शैली से मुग़ल मुखाकृति चित्रण की कला का विकास हुआ जिसमें कुशलता नजर आती है। रंग योजना में चित्रों की पृष्ठभूमि में प्रायः धुँधले अर्थात् उदासीन व शीतल रंगों का प्रयोग हुआ। कपड़ों, पर्दो, कालीनों तथा अन्य साज–सामान में जटिल आलेखन बनाये गये और उनमें सोने के रंग का भी प्रयोग किया गया। आरम्भिक ईरानी शैली में बने चित्रों में चेहरे डेढ़ चश्म हैं परन्तु बाद के अधिकांश व्यक्ति चित्र एक चश्म हैं। मुग़ल चित्रों में भवनों का अत्यधिक प्रयोग किया गया, घुमावदार महराबें व स्तम्भों पर मोजाईक के आलेखन बनाये गये तथा दुर्गों के चित्रण में विशाल द्वार, परकोटे, कंगूरे, बुर्जियाँ आदि विशेषताएँ दर्शनीय हैं। मुग़ल दरबार में यूरोपियन कला का प्रभाव बढ़ रहा था तो भी मुग़ल कला ने अपनी निजी विशेषताएँ'– आलंकारिक योजना, संगत रंगों की शीतलता तथा सुमधुर कोमलता, सीमा रेखा के साथ गोलाई, उभार या डौल की विशेषताओं को बनाए रखा। मुग़ल चित्रों पर दृष्टिपात करने से यह स्पष्ट हो जाता है कि यह बादशाहों और उनके मुसाहिबों की दरबारी कला थी, जिसमें जन–जीवन की झाँकी नहीं है। इसमें केवल राज्याधिकारियों, समाज–नियंत्रको और देश के भाग्य निर्णायकों की ही जीवनचर्या व रूचियाँ दिखाई देती हैं। यह चित्रकला जनसाधारण के जीवन से दूर रही और कभी–भी उसका सम्बन्ध लोक भावना से नहीं हो पाया। मुग़ल कला मुग़ल वैभव, विकास और ठाट–बाट में ही खोई रही और उसके अधिकांश चित्र इतने मूल्यवान होते थे कि साधारण जनता इतना व्यय भी नहीं कर सकती थी।

महत्त्वपूर्ण बिन्दु :–

1.1526 ई. में पानीपत के युद्ध में विजय प्राप्त कर बाबर दिल्ली का शासक बना, तभी से भारत में मुग़लों का प्रवेश हुआ।

2. प्रारम्भ में मुग़लकला पर ईरानी कला का प्रभाव था। धीरे–धीरे राजस्थानी अपभ्रंश व दक्षिण शैलियों के प्रभावों

के समन्वय से मौलिक रूप प्राप्त किया।

3. जहाँगीर के समय में मुग़ल कला पूर्ण विकसित हुई।
4. औरंगजेब के शासन में इस कला का पतन हो गया।
5. मुग़ल कला के विषय दरबारी शानोशौकत, शासकों के शबीह चित्र, आखेट– दृश्य, ऐतिहासिक व पौराणिक कथाओं के चित्र व धार्मिक कथाओं से सम्बन्धित थे।
6. अग्रभूमि के चित्रण में यथार्थवादी दृष्टिकोण है।
7. रेखाओं में लयात्मकता व गति है।
8. प्रकृति चित्रण को यथेष्ट स्थान दिया है। नारी–चित्रण गौण है।
9 हाशियों कों भी चित्रित किया है। कहीं– कहीं हाशिये मुख्य चित्र से भी अधिक सुन्दर बने हैं।
10. सादृश्य व यथार्थता लाने के लिये छाया का प्रयोग किया है जिससे गहराई वाला भाग व उठा हुआ भाग स्पष्ट दिखाई देता है।

अभ्यासार्थ प्रश्न

लघूत्तरात्मक प्रश्न

1 किन दो ईरानी चित्रकारों ने मुग़ल कला का सूत्रपात किया ?
2 मुग़ल कला को दरबारी कला क्यों कहा जाता है ?
3 जहाँगीर कालीन प्रमुख चित्रकार कौन कौन थे ?
4 मुग़ल कला के पतन के क्या कारण थे ?
5 'शबीह' किसे कहा जाता था ?
6 पशु–पक्षियों के चित्र बनाने के लिए किस मुग़ल चित्रकार को जाना जाता है ?

निबंधात्मक प्रश्न

1 अकबर कालीन मुग़ल कला की विषय वस्तु व विशेषताएं लिखिए।
2 'जहाँगीर काल मुग़ल कला का सर्वश्रेष्ठ समय था' सिद्ध कीजिए ।
3 मुग़ल कला के विकास क्रम पर निबंध लिखिए ।
4 शाहजहाँ कालीन कला पर विस्तृत टिप्पणी लिखो ।
5 अकबरकालीन प्रमुख चित्रकारों का परिचय दीजिए ।